Anusandhanvallari
Vol 2023, No.1
August 2023
ISSN 2229-3388

# वैश्वीकरण के दौर में महिलाओं की बदलती भूमिका

**निशा[1], डॉ. विपिन कुमार (प्रोफेसर)[2]**

समाजशास्त्र विभाग

[1,2] सनराइज यूनिवर्सिटी, अलवर, राजस्थान

**शोध सारांश**

प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है। वैश्वीकरण के बाद भारतीय महिलाओं की स्थिति में आमूल परिवर्तन आया। यह घर की चारदीवारी से बाहर निकली और देश के बहुआयामी विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने लगी। आज हमारे देश की महिलायें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति कर रही हैं। सदियों से सदियों से दोयम प्रस्थिति से महिलाओं ने अब आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक गुलामी से बाहर निकलकर एक स्वतंत्र जीवन विकसित करने का अवसर प्राप्त किया। इस विश्लेषण से यह पता चलता है कि नारीवादी विचार कैसे विकसित हुआ और समाज और संस्कृतियों में शामिल हो गया।

**शब्द कुंजी :** वैश्वीकरण और महिलायें, महिलाओं की बदलती भूमिका, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नारीवाद, स्थिति परिवर्तन इत्यादि।

## प्रस्तावना

नब्बे के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई थी, तब तात्कालीन प्रधानमंत्री श्री पी. वी. नरसिम्हाराव ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को भारत के लिए स्वीकार किया। वैश्वीकरण एक प्रक्रिया के तहत लागू होने वाला था जिसमें सबसे पहले उदारीकरण, निजीकरण और तब वैश्वीकरण। वैश्वीकरण से भारतीय अर्थव्यवस्था को तत्काल राहत मिली। विश्वभर से विदेशी निवेशकों के आने से बाज़ार में पूंजी की बढ़ोत्तरी हुई। जिससे नए उद्योग, व्यापार, रोजगार के अवसर नई जीवन शैली के उभरने का समय शुरू हुआ।

वैश्वीकरण ने भारतीय समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी थी, भौतिक संस्कृति में परिवर्तन तीव्र गति से और अभौतिक संस्कृति में थोड़ी धीमी गति से। इसी के साथ-साथ नीतिगत ढांचों में भी परिवर्तन शुरू हो गया था। दरअसल, जब विदेशी निवेशकों ने अपने व्यवसायों को यहाँ स्थापित करना शुरू किया तो उसे संचालित करने के लिए अपने नियम और नीति लागू किये। वैश्वीकरण मूलतः पूंजीवाद को बढ़ावा देने की नीतियों का पुंज है। पूंजीवाद का मूल मंत्र अत्यधिक मुनाफा कमाना है। पूंजीवादी मुनाफा की ओर रुझान रखते हुए भी वैश्वीकरण ने सामाजिक और मानवीय विषयों और मुद्दों को विश्व के कोने-कोने में पहुंचा दिया। जिसमें सबसे ज़्यादा चर्चित विषय Second Sex अर्थात स्त्री है।

## विश्लेषण

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के प्रारंभ होने के साथ ही परंपरागत भारतीय समाज में भी परिवर्तन की शुरूआत हो गई। वैसे तो परिवर्तन सामान्य तौर पर चारों दिशाओं में विस्तारित होता है, लेकिन कभी-कभी वह किसी विशेष दिशा या इकाई को तीव्र और अधिक प्रभावित करता है। भारत के संदर्भ में वैश्वीकरण का प्रभाव अत्यधिक सकारात्मक देखने को मिलता है। जिसमें महिलाओं की बदलती स्थिति उल्लेखनीय है।

## महिला स्थिति एवं उनकी भूमिकाओं में बदलाव

विश्लेषण के आधार पर देखें तो निम्नलिखित पक्षों पर महिलाओं की स्थिति का आँकलन किया जा सकता है।

### 1. मूल्य व्यवस्था में बदलाव

दुनिया के अधिकांश देशों में पितृसत्ता देखने को मिलती है, जिसमें भारतीय समाज भी पितृसत्ता से संबंधित समाज है। नई व्यवस्था के प्रभाव से पितृसत्तात्मक मानसिकता में भी बदलाव आया। जहां महिलाओं को घर की चारदीवारियों तक ही सीमित समझा जाता था, वहाँ इस सोच में बदलाव हुआ है। वैश्वीकरण के साथ विकसित एवं पश्चिमी देशों ने अपनी संस्कृति का भी प्रसार किया, जिसके कारण भारत के परंपरागत एवं रूढ़िगत समाज में पश्चिमी देशों का प्रभाव पड़ने लगा। विदेशी कंपनियां जो यहाँ व्यापार के उद्देश्य से आई थीं उन्होंने लैंगिकता को महत्व देने के बजाय दक्षता को महत्व दिया, जिसके कारण महिलाओं को रोजगार के अवसर मिले। जिसके कारण परंपरागत भारतीय समाज में महिलाओं के रोजगार करने के संबंध में विचार में बदलाव आया। पितृसत्ता की सामंती सोच में उदारता आई, जब महिलाओं पर घर की इज्जत के नाम पर घर के बाहर जाने पर प्रतिबंध था। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के कारण रोजगार के मौकों का फायदा लेने के लिए बदलते विचार की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

### 2. परिवार में बदलती भूमिका

वैश्वीकरण ने भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका को बदलने का मौका दिया है। जैसे-जैसे परिवारों में कामकाजी महिलाओं की संख्या बढ़ी वैसे-वैसे उनकी पारिवारिक भूमिकाओं में बदलाव आने लगे, जैसे निर्णय लेने में भागीदारी बढ़ना, मन मुताबिक व्यवस्था बनाना, खान-पान में निर्णय लेना, बच्चों की शिक्षा के संबंध में निर्णय लेना इत्यादि। आमतौर पर कामकाजी महिलाओं को घरेलू कार्य से मुक्ति नहीं मिल पाती है। संगठित क्षेत्र की कामकाजी महिलायें घर और बाहर दोनों जगहों के कार्यों के साथ तालमेल बीठा पाती हैं, लेकिन असंगठित क्षेत्र की कामकाजी महिलाओं के लिए यह थोड़ा कठिन है। फिर भी ऐसे आँकड़े कम हैं जब कामकाजी महिलाओं के घरेलू काम के कारण परिवार पर असर पड़ा हो। सब मिला कर देखें तो हम पाएंगे कि महिलाओं ने सभी प्रकार के दबाव के बाद भी अपने आप को परिस्थिति में ढाल लिया है। और उसके अनुसार भूमिकाओं को भी ग्रहण कर लिया है।

### 3. शिक्षा एवं रोजगार की स्वतंत्रता

बढ़ते रोजगार के अवसर ने शिक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य में बदलाव लाया है। अब रोजगार परक शिक्षा ग्रहण करने का प्रचलन बढ़ने लगा है। पहले स्त्री शिक्षा पर ही जोर दिया जाता था, परंतु अब रोजगार परक शिक्षा पर जोर दिया जाता है। विगत वर्षों के आँकड़े भी दिखाते हैं कि महिलाओं का शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ाता है। जैसे यह आंकड़ा बताता है कि वर्ष 2021-22 में विज्ञान संकाय में नामांकित छात्राओं की संख्या 29.8 लाख तक पहुँच गई थी और वहीं लोअर सेकेंडरी एजुकेशन पूरी करने की 88.8% थी। 2017-18 में देश के वर्कफोर्स में महिलाओं की हिस्सेदारी 23 प्रतिशत थी, जो वर्ष 2022-23 में बढ़कर 37% हो गई है। महिलाओं के लिए भी व्यावसायिक शिक्षा को महत्वपूर्ण समझते हुए समान अवसर प्रदान किया जाने लगा। शिक्षा और रोजगार का सीधा संबंध होता है, व्यक्ति जैसी शिक्षा ग्रहण करता है, उसे अनुसार रोजगार भी पाता है। और व्यावसायिक शिक्षा का तो उद्देश्य ही उस खास तरह के रोजगार को पाना है जिसकी शिक्षा ग्रहण की गई है। महिलाओं ने शिक्षा के अवसर को चुनौती की तरह चुना है, जिसे वह हर स्तर पर पूर्ण करना चाहती है। वैश्वीकरण के दौरान विभिन्न तरह की नई व्यावसायिक शिक्षा की भी स्थापना हुई, जिसमें महिलाओं ने भी बढ़-चढ़ कर दाखिला लिया। पर्यटन, प्रबंधन, ट्रांसपोर्ट, होटल, बैंकिंग इत्यादि जैसे कई व्यवसायों में महिलाओं की भागीदारी लगातार बढ़ी है।

### 4. निर्णय लेने की स्वतंत्रता

शिक्षा और रोजगार ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया है। उनके भीतर निर्णय लेने का विवेक और समझ विकसित हुई। शिक्षा ने महिलाओं को कई स्तर पर जागरूक किया है। अपने प्रति हो रहे अपमान, शोषण, हिंसा एवं लैंगिक भेदभाव को उन्होंने पहचाना है। और यह समझ भी वैश्वीकरण की ही देन है। जब भारत से पहले यूरोप और अन्य देशों में महिला अस्मिता और

उनके प्रति हो रही घरेलू हिंसा का मुद्दा प्रखर हुआ वैश्वीकरण की नीतियों के कारण वह भारतीय अकादमिक समाज में चर्चित हुआ। और इसी के साथ भारत सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा महिलाओं को विभिन्न मुद्दों पर संरक्षण प्रदान किया गया। घरेलू हिंसा विरोध का कारण बना इत्यादि। जिसके परिणाम स्वरूप स्त्रियों ने अपने लिए निर्णय लेने की स्वतंत्रता हासिल कर ली। निर्णय लेने की क्षमता ने उन्हें जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण फैसले लेने के लिए प्रेरित किया, जैसे विवाह के लिए साथी चुनना, शिक्षा के क्षेत्र में अभिरुचि अनुसार विषय चुनना, खान-पान चुनना, रहन-सहन और फैशन चुनना, रोजगार अपनी पसंद का चुनना इत्यादि।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के दौरान ही महिला अस्मिता पर चर्चाएं आम हुई हैं, और महिलाओं ने अस्मिता के प्रश्न का हल तलाशा है। जिसके कारण महिलाओं में आत्मविश्वास की बढ़ोत्तरी हुई। अपने लिए और अपनी बात करने की महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन आज की महिलायें कर रही हैं।

### 5. सामाजिक भूमिकाओं में बदलाव

वैश्वीकरण के कारण जब महिलाओं को अपने घर की चारदीवारियों से बाहर आने का अवसर मिला तो उन्होंने सभी दिशाओं में अपनी नई भूमिकाओं को तलाशा। महिलाओं ने अपनी सामाजिक भूमिकाओं में नए मुकाम कायम किये हैं। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है, जैसे बाज़ार, स्वास्थ्य, जन सेवा, सुरक्षा, एनजीओ, एनडीआरएफ इत्यादि। ऐसे बहुत सारे जागरूकता, सुरक्षा, स्वास्थ्य मिशन संचालित हैं, जिनको पूर्ण रूप से महिलायें चला रही हैं।

## निष्कर्ष:

वैश्वीकरण एक दूरगामी प्रक्रिया है, जिसके चलते रहने का प्रमाण है कि भारतीय समाज की महिलायें लगातार अपने लिए नई जमीन बना रही हैं। वर्तमान में महिलाओं ने अपनी स्थिति को उन्नत किया एवं उसी के अनुसार अपनी भूमिका को भी तय कर लिया है। निश्चित तौर पर वैश्वीकरण से पहले की स्थिति से आज महिलाओं की स्थिति भिन्न है। वैश्वीकरण वैश्विक अवधारणाओं को जन्म देता है, जिसका तात्पर्य है कि दुनिया के प्रत्येक समाज की महिलाओं की भूमिका में कम या ज़्यादा परिवर्तन हो रहा है।

## संदर्भ सूची :

1. आशारानी व्होरा – औरत कल, आज और कल कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली, 2006
2. एम. के. गांधी – वीमेन एण्ड सोशल इन जस्टिस, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1954
3. प्रो. कसुमलता केडिया, प्रो. रामेश्वर प्रसाद मिश्र – स्त्रीत्व, धारनाएं एवं यथार्थ, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 2004
4. नाटाणी, प्रकाश नारायण, गौतम ज्योतिः लिंग एवं समाज, रिसर्च पब्लिकेशन 89, जयपुर, 2004
5. साधना आर्य, लता सिंह – भारत में महिला आंदोलन विमर्श और चुनौतियाँ, राधाकृष्ण पेपर बैक, 2003
6. अमित कुमार सिंह – भूमंडलीकरण और भारत, सामयिक प्रकाशन, 2009
7. सच्चिदानंद सिन्हा – भूमंडलीयकरण की चुनौतियाँ, वाणी प्रकाशन, 2003